नमो-नमो दुर्गे सुख करनी। नमो-नमो दुर्गे दुःख हरणी।।

शनिवार, 15 अगस्त, 2026 ।

वर्ष 19 । अंक 121 । पृष्ठ 4 ।

आरएनआई नंबर : RAJHIN/2007/20298

व्हाट्स एप नंबर : 85291-15101

Email : berisgnr@gmail.com

website: www.sandhyadep.world

साँध्यदीप

We Fight For Human Rights

संकट में काम आयीं पिछले 10-12 साल की सुविचारित योजनाएं : मोदी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि सरकार ने पिछले 10-12 साल में 'नागरिक देवो भव' के मंत्र के साथ जो सुधार किये और जो नीतियां अपनायीं, उसी का परिणाम है कि कोरोना महामारी तथा पश्चिम एशिया के संकट के बावजूद देश तेजी से आगे बढ़ रहा है।

लाल किले की प्राचीर से 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देश को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि पिछले 10-12 साल में दुनिया में कई संकट आये। कोरोना ने पूरी दुनिया को चिंता में डाल दिया। उसके बाद यूक्रेन और पश्चिम एशिया के युद्ध आये। हर जगह तनाव का माहौल था। 'भविष्य वक्ताओं' ने तो कहा कि वैक्सीन नहीं मिलेगी, कोविड में लोग बचेंगे नहीं, पेट्रोल-डीजल नहीं मिलेगा, गैस नहीं मिलेगी। उन्होंने देश को डराने का काम किया, इसी में उन्हें आनंद आता है। उन्होंने कहा, देश ने देख लिया कि पिछले 10-12 साल की सुविचारित योजनाएं रंग ला रही हैं। 'नागरिक देवो भव' के मंत्र को लेकर जीते हुए भारत ने पिछले 10-12 साल में जो तैयारियां की थीं, एक के बाद एक जो कदम उठाये थे, ...वे सभी चीजें काम आ गयीं। आज देश में पेट्रोल भी है, डीजल भी है, गैस भी है, यूरिया भी है। हम अपनी ताकत के बल पर चल रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया के इस संकट का प्रभाव हर किसी पर हुआ है और भारत भी अछूता नहीं है। एक बोरी यूरिया की कीमत दुनिया में तीन हजार रुपये पर पहुंच गयी है, लेकिन देश में किसानों पर वह बोझ न डालकर आज भी उन्हें सिर्फ 300 रुपये में यूरिया की बोरी दी जा रही है। डीएपी की कीमत दुनिया

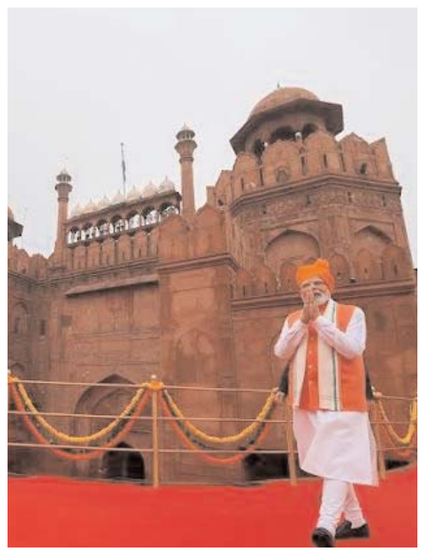

में पांच हजार रुपये है जो देश के किसानों को 1,350 रुपये में दी जा रही है।

उन्होंने कहा कि संसाधन के कारण देश रुकता नहीं है, कई बार इसका कारण सोच होती है। देश को आज कच्चे तेल पर निर्भर रहना पड़ रहा है। ऐसी सोच के कारण समुद्री तट का हमारा हिस्सा 90 प्रतिशत हिस्सा 'नो गो एरिया' घोषित कर दिया गया था। यह सोच का दारिद्र था। उनकी सरकार ने उसे 'गो अहेड एरिया' के रूप में खोल दिया है। हम समुद्र के अंदर भी नये-नये भंडार खोजने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं। मोदी ने कहा, बीते वर्षों में सरकार का ध्येय रहा है कि हमें अब दूसरे देशों पर निर्भर रह कर नहीं जीना है, हमें आत्मनिर्भर होना चाहिये। दुनिया में बहुत कुछ मिलता है, सस्ता मिलता है, लेकिन उससे हमारा सामार्थ्य नहीं बनता है। हमें भी अपनी क्षमता बढ़ानी है। मेक इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल जैसे क्षेत्रों में आज हर भारतीय का मन जुड़ चुका है। सेमीकंडक्टर का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि पहले सेमीकंडक्टर की बातें होती थीं, लेकिन हम उसमें आगे नहीं बढ़ सके।आज की दुनिया में हर इलेक्ट्रॉनिक, मेडिकल और परिवहन उपकरण में चिप जरूरी है। देश में तीन सेमीकंडक्टर प्लांट शुरू हो गये हैं। वहां से निर्यात भी शुरू हो चुका है। आने वाले सात-आठ साल में और पांच-छह सेमीकंडक्टर प्लांट शुरू होने वाले हैं। उन्होंने कहा कि पूरी सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी क्रिटिकल मिनरल पर आधारित हैं। इसी को देखते हुए सरकार ने कई देशों के साथ इसके लिए समझौते किये हैं।

परीक्षाओं के लिए युवाओं को फ्री ऑनलाइन कोचिंग : पीएम

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत के लक्ष्य में युवाओं की भूमिका को बेहद महत्वपूर्ण बताते हुए प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए देश में निशुल्क ऑनलाइन कोचिंग की व्यवस्था करने तथा एक करोड़ युवाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का प्रशिक्षण देने की घोषणा की है।

मोदी ने शनिवार को 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ऐतिहासिक लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक होने के विषय को लेकर हुए विरोध प्रदर्शनों का जिक्र करते हुए यह घोषणा की।

देश में बढते महंगे कोचिंग व्यवसाय का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह मध्यम वर्ग के लिए बड़ा बोझ बन गया है। उन्होंने कहा कि इस बोझ को दूर करने के लिए सरकार देश भर में युवाओं के लिए निशुल्क ऑनलाइन कोचिंग का नेटवर्क बनायेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा, हमारे मध्यम वर्ग के लिए कोचिंग क्लास की स्पर्धा बहुत बड़ा बोझ बन चुकी है। मां-बाप को लग रहा है कि यदि कोचिंग क्लास में बच्चे को नहीं भेजा तो हम प्रतिष्ठित परिवार नहीं हैं। सरकार ने इन गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों की चिंता की है। उनका हजारों करोड़ रुपये का खर्च भी बचे और उनके बच्चे भी उनके आसपास रहे सके, उनकी देखभाल हो सके, परिवार पर आर्थिक बोझ न आये और इसलिए हमने युवाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की फ्री आनलाइन कोचिंग की व्यवस्था करने का निर्णय लिया है।

उन्होंने कहा, देश में डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर है, उत्तम प्रतिभा और शिक्षक हैं। इन संसाधनों को जोड़कर हम देश के नौजवानों को फ्री कोचिंग देने का नेटवर्क खड़ा करेंगे।

प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर यह घोषणा भी की कि दुनिया भर में एआई की बढ़ती उपयोगिता को देखते हुए तथा युवाओं को इसमें निपुण बनाने के लिए एक करोड़ युवाओं को एआई का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

उल्लेखनीय है कि नीट यूजी परीक्षा के पेपर लीक होने के विरोध में देश भर में व्यापक विरोध प्रदर्शन हुआ और सरकार को छात्रों तथा युवा प्रदर्शनकारियों की मांग के आगे झुकना पड़ा। इसके कारण शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा।

भागवत ने आरएसएस मुख्यालय पर तिरंगा फहराया

नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने शनिवार को नागपुर के महल इलाके में स्थित संघ मुख्यालय पर 8वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

ध्वजारोहण समारोह आज सुबह आठ बजे कड़ी सुरक्षा के बीच आयोजित किया गया, जिसमें संघ के स्वयंसेवक और प्रचारक शामिल हुए।

श्रीगंगानगर में हर्षोल्लास से आयोजित हुआ स्वतंत्रता दिवस का मुख्य समारोह

श्रीगंगानगर। स्वतंत्रता दिवस का मुख्य समारोह शनिवार को डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय के खेल प्रांगण में समारोहपूर्वक आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव ने प्रातः 9.05 बजे ध्वजारोहण किया।

मुख्य समारोह में जिला कलक्टर ने परेड का निरीक्षण कर मार्च पास्ट की सलामी ली। मार्च पास्ट में आरएसी, राजस्थान पुलिस, महिला पुलिस, बॉर्डर होमगार्ड, अरबन होमगार्ड, एनसीसी सीनियर छात्रा, एनसीसी सीनियर छात्र, हिन्दुस्तान स्काउट और भारत स्काउट गाईड की टुकडियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में एडीएम प्रशासन सुभाष कुमार ने महामहिम राज्यपाल का प्रदेशवासियों के नाम संदेश का पठन किया। कार्यक्रम में यादे माटी कला बोर्ड अध्यक्ष प्रहलाद टाक, श्रीगंगानगर विधायक जयदीप बिहाणी, सादुलशहर विधायक गुरवीर सिंह बराड़, एसपी हरिशंकर सहित अन्य ने उपस्थित स्वतंत्रता सेनानियों व वीरांगनाओं को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों ने आर्कषक व्यायाम प्रदर्शन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में बिहाणी चिल्ड्रन एकेडमी, बिरला पब्लिक स्कूल, टाइनी टॉटस, आत्मवल्लभ जैन पब्लिक सीनियर सैकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने देश भक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उल्लेखनीय कार्य करने वाले संस्थाओं, व्यक्तियों, कार्मिकों, विद्यार्थियों, खिलाडियों के अलावा कार्यक्रम में परेड और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां देने पर विद्यालयों को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर जिला प्रमुख दुलाराम इंदलिया, जिला परिषद सीईओ गिरधर, एसडीएम गंगानगर गौतम नयन, कैलाश शर्मा, नगरपरिषद आयुक्त मिलखराज चुघ, डॉ. अजय सिंघला, विजय कुमार, मोहनलाल अरोड़ा, दिनेश राजपुरोहित, एएसपी दीपक शर्मा, रतनलाल गणेशगढिया, शिवप्रकाश तेहरपुरिया, अशोक चाण्डक सहित अन्य उपस्थित रहे। भारत सिडाना, अमृतपाल, श्रीमती मीनाक्षी आहूजा ने मंच संचालन किया। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक वीरेन्द्रपाल सिंह ने उपस्थितजनों को नशामुक्ति की शपथ दिलाई। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मुख्य समारोह के अतिरिक्त अन्य सरकारी कार्यालयों में भी विभागाध्यक्षों ने तिरंगा फहराकर स्वतंत्रता समारोह को उल्लास के साथ मनाया। जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय में एसपी हरीशंकर ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर अनेक पुलिस अधिकारी उपस्थित थे। इसके साथ ही शैक्षणिक संस्थाओं में भी राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और बच्चों को मिष्ठान का वितरण कर उत्साह के साथ आजादी के पर्व को मनाया।

इसी तरह से हनुमानगढ़ जिले में भी स्वतंत्रता दिवस पर सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में तिरंगा फहराया गया। इसी तरह से आठ दिवसीय हर घर तिरंगा और तिरंगा यात्रा के नाम से चल रहे अभियान के तहत भी लोगों को स्वतंत्रता दिवस समारोह से जोड़ा गया। यह अभियान हर वर्ष आयोजित होता है और लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना का संचार किया जा रहा है।

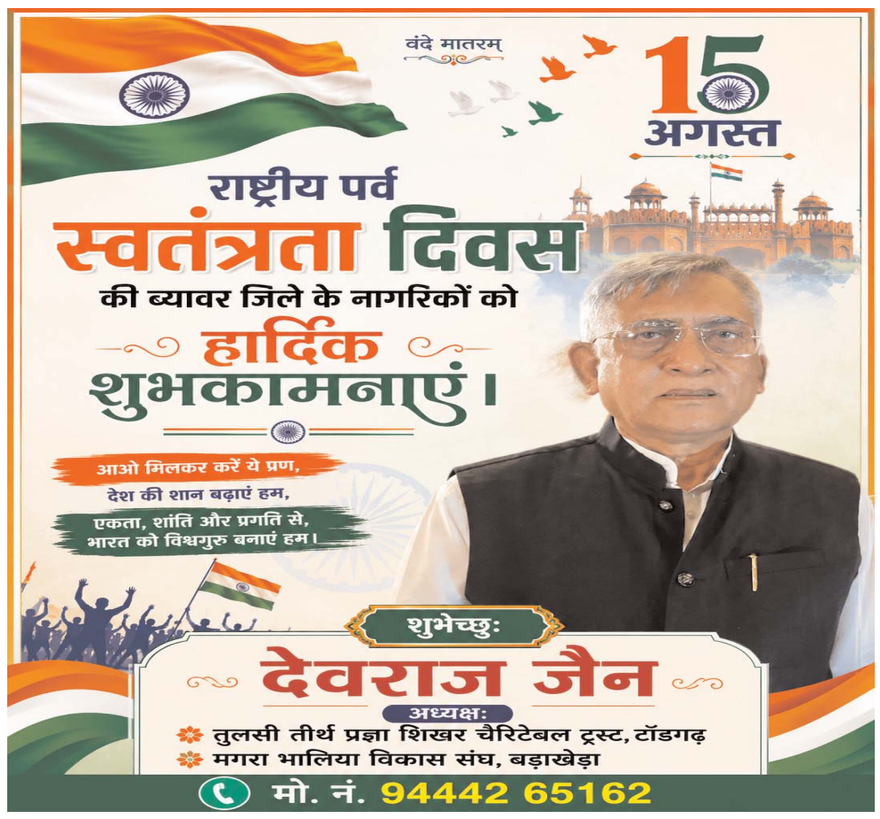

संपादकीय | हादसे के बाद भी क्यों नहीं सुधरती व्यवस्था?

नागरिक उड्डयन मंत्रालय का कहना है कि इस हादसे के प्रारंभिक जांच निष्कर्षों को गंभीरता से लिया गया है और अब इसकी गहराई से जांच की जाएगी। जब भी कोई विमान हादसा होता है, तो उसके जांच निष्कर्षों का पहला सबक यही होना चाहिए कि भविष्य में उस तरह की खामियां किसी दुर्घटना का कारण न बनें। मगर विमान हादसों का सिलसिला जिस तरह बदस्तूर जारी है, उससे यह विश्वास करना मुश्किल है कि सबक लेने और सुधार की प्रक्रिया में कहीं कोई गंभीरता बरती जाती है। कहने को यात्रियों की सुरक्षा सरकार और विमानन कंपनियों के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है, लेकिन धरातल पर स्थिति कुछ और ही नजर आती है। तकनीकी सतर्कता की कमी और मानव जनित गड़बड़ियों को दूर करने के लिए तमाम तरह के नियम बनाए गए हैं, मगर इनका सख्ती से पालन सुनिश्चित करने के लिए मजबूत तंत्र का अभाव आज भी साफ दिखाई देता है। इसका ताजा उदाहरण हाल में थाईलैंड के फुकेत से दिल्ली आ रही एयर इंडिया की उड़ान के साथ हुआ वह हादसा है, जिसमें विमान हवा में अचानक अनियंत्रित होकर तीन सौ फुट नीचे आ गया और सत्रह यात्री घायल हो गए। इस विमान में चालक दल के साथ कुल 145 यात्री सवार थे। हादसे की प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि विमान के मुख्य पायलट ने मनःप्रभावी यानी नशीले पदार्थ का सेवन किया था। इससे हवाई सफर के दौरान यात्रियों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। देश में हवाई यात्रा की सुविधा का दायरा बढ़ाने के लिए विमान सेवाओं का भले ही विस्तार किया जा रहा है, विमान किराये में भी आए दिन बेलगाम तरीके से बढ़ोतरी होती रहती है, मगर सुरक्षा के मोर्चे पर मानकों के

अनुरूप सतर्कता, सक्रियता और गंभीरता पर ध्यान कम ही दिया जाता है। यही वजह है कि कभी तकनीकी खराबी, कभी मानवीय चूक, तो कभी मौसम की अप्रत्याशित चुनौतियां विमान हादसों का कारण बनती हैं। फुकेत से दिल्ली आ रहे विमान के अनियंत्रित होने की वजह वायुमंडलीय अस्थिरता यानी एयर टर्बुलेंस बताई गई थी। हालांकि बाद में इस विमान को दिल्ली हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतार लिया गया था, मगर अहम सवाल यह है कि देश भर में होने वाले विमान हादसों से सबक क्यों नहीं लिया जाता है?

इस तरह की दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने और विमान यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी आखिर किसकी है? इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि पायलटों तथा अन्य प्रशिक्षित कर्मियों की जरूरत के मुताबिक तैनाती नहीं हो पाने से संचालन तंत्र पर दबाव बढ़ रहा है और इससे मानवीय चूक की संभावनाएं भी अक्सर बनी रहती हैं। मगर जब पायलट नशीले पदार्थ का सेवन कर विमान उड़ाने लगे, तो यह व्यवस्था पर गंभीर प्रश्न खड़ा करता है। क्या उड़ान से पहले चालक दल का जरूरी परीक्षण नहीं किया जाता है? अगर नियमानुसार यह व्यवस्था लागू है, तो फिर क्या वजह है कि फुकेत-दिल्ली उड़ान के मुख्य पायलट के नशीले पदार्थ के सेवन की बात पहले पकड़ में नहीं आई, जिस कारण यात्रियों की जान मुश्किल में पड़ गई। अगर समय रहते स्थिति नियंत्रण में नहीं आती, तो बड़ा हादसा हो सकता था। नागरिक उड्डयन मंत्रालय का कहना है कि इस हादसे के प्रारंभिक जांच निष्कर्षों को गंभीरता से लिया गया है और अब इसकी गहराई से जांच की जाएगी। मगर सवाल यही है कि क्या इस जांच के नतीजे से सबक लेकर भविष्य में ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए अतिरिक्त सतर्कता एवं सुरक्षा उपायों पर ध्यान दिया जाएगा या फिर इसे भी संबंधित हादसे तक ही सीमित रखा जाएगा?

गुजरात में परिचय की आड़ में प्रताड़ना, रैगिंग ने फिर ली जान

कॉलेज में प्रथम वर्ष के एक रेजिडेंट डॉक्टर अपने चार वरिष्ठों के हाथों बेलगाम रैगिंग से इस कदर परेशान हुए कि आखिरकार उन्होंने रविवार को आत्महत्या कर ली। गुजरात में सूरत के सरकारी मेडिकल कॉलेज में रैगिंग की वजह से एक छात्र की आत्महत्या के मामले ने फिर यही साबित किया है कि आज भी कुछ लोग अपने भीतर मौजूद श्रेष्ठता-ग्रंथि की वजह से दूसरों के मान-अपमान और यहां तक कि जीवन की भी परवाह नहीं करते। गौरतलब है कि कॉलेज में प्रथम वर्ष के एक रेजिडेंट डॉक्टर अपने चार वरिष्ठों के हाथों बेलगाम रैगिंग से इस कदर परेशान हुए कि आखिरकार उन्होंने रविवार को आत्महत्या कर ली। मामले के तूल पकड़ने के बाद कॉलेज प्रशासन ने आरोपी रेजिडेंट डॉक्टरों को छह महीने के लिए निलंबित किया और उन्हें छात्रावास खाली करने का आदेश दिया। चारों आरोपियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराने के अलावा कुछ संकाय प्राध्यापकों को भी नोटिस जारी किया गया। सवाल है कि एक छात्र के पीड़ा की अति से गुजरने और आत्महत्या कर लेने के बाद कॉलेज प्रशासन की जिस तरह नींद खुली, क्या वह ऐसी सक्रियता को अपना नियमित दायित्व नहीं मान सकता था! अगर परिसर में रैगिंग पर पूरी तरह रोक लगाने को लेकर कॉलेज प्रशासन पहले से गंभीर होता, तो पीड़ित रेजिडेंट डॉक्टर की जान बच सकती थी। विडंबना यह है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में रैगिंग के चलन के त्रासद नतीजों पर व्यापक चिंता उभरने, इस पर रोक लगाने की चौतरफा मांग और इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट के सख्त दिशानिर्देशों के बावजूद इस समस्या पर पूरी तरह काबू नहीं पाया जा सका है। संस्थानों में आज भी ऐसी व्यवस्था कायम नहीं की जा सकी है कि वहां नवागंतुकों को बिना भय और हिचक के सहज माहौल में पढ़ाई-लिखाई करने का मौका मिले। जिन नए विद्यार्थियों को अपने शुरुआती दौर में ही परिचय के नाम पर अपमानबोध और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, उनके मन-मस्तिष्क पर इसका गहरा असर पड़ता है और कई बार जीवन और समाज के प्रति उनका नजरिया भी निर्धारित हो जाता है।

आज का कार्टून

आखिर जल संकट का असली कारण क्या है?

बरसात का मौसम भारत में हर वर्ष एक ऐसा दृश्य रचता है, जो पहली नजर में सुहाना लगता है, लेकिन वास्तव में यह हमारी विकास-नीति की सबसे बड़ी विडंबना को भी उजागर करता है। देश का एक हिस्सा बाढ़ में डूबा होता है, नदियां तटबंध तोड़ रही होती हैं, खेत जलमग्न हो जाते हैं और हजारों परिवार अपने घर छोड़ने को विवश हो जाते हैं। उसी समय दूसरे हिस्से में लोग पीने के पानी के लिए संघर्ष कर रहे होते हैं।

मनीष जैसल

कहीं पानी विनाश का कारण बनता है, तो कहीं उसका अभाव जीवन को संकट में डाल देता है। प्रश्न यह नहीं कि भारत में पानी कम है या अधिक, बल्कि यह है कि क्या हमने पानी को संसाधन भर माना या उसे जीवन, समानता और न्याय के अधिकार के रूप में समझने का प्रयास किया? देश में जल संकट को प्रायः पर्यावरण, कृषि या विकास से जुड़ी समस्या के रूप में देखा जाता है, जबकि यह मूलतः शासन और संवैधानिक उत्तरदायित्व का प्रश्न है। यदि किसी गांव की महिलाओं को प्रतिदिन कई किलोमीटर चलकर पानी लाना पड़ता है, किसी सरकारी विद्यालय में बच्चे दूषित पानी पीने को विवश हैं, किसी सरकारी कार्यालय में कर्मचारियों के लिए सुरक्षित पेयजल की व्यवस्था नहीं है, बाढ़ के बाद राहत शिविरों में स्वच्छ पानी उपलब्ध नहीं हो पाता है, तो इसे केवल प्रशासनिक लापरवाही कहना संविधान में निहित समानता, गरिमा और जीवन के अधिकार की अधूरी व्याख्या है।

भारतीय संविधान में भले ही जल के अधिकार को अलग से मौलिक अधिकार के रूप में उल्लिखित नहीं किया गया हो, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन के अधिकार की जो व्यापक व्याख्या की है, उसमें स्वच्छ पेयजल को गरिमामय जीवन की अनिवार्य शर्त माना गया है।

अनुच्छेद 47 राज्य को जनस्वास्थ्य सुधारने का दायित्व देता है। अनुच्छेद 48(क) पर्यावरण और जल स्रोतों के संरक्षण की बात करता है, जबकि अनुच्छेद 51(क) एवं (ग) प्रत्येक नागरिक को नदियों, झीलों और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा का नैतिक दायित्व सौंपता है। गंगा, यमुना, घाघरा, राप्ती और शारदा जैसी विशाल नदियों वाला उत्तर प्रदेश हर वर्ष बाढ़ से प्रभावित होता है। पूर्वांचल के अनेक जिले महीनों तक जलभराव झेलते हैं, जबकि बुंदेलखंड का बड़ा हिस्सा गर्मियों में पेयजल संकट से गुजरता है। एक ही राज्य में पानी की अधिकता और कमी का साथ-साथ मौजूद होना बताता है कि समस्या प्राकृतिक नहीं, बल्कि प्रबंधन की है।

बिहार की स्थिति इससे भी अधिक जटिल है। कोसी को लंबे समय से 'बिहार का शोक' कहा जाता है, लेकिन केवल नदी को दोष देकर समस्या का समाधान नहीं निकलेगा। नेपाल से आने वाला जल प्रवाह, नदी तल में गाद का लगातार जमाव, तटबंधों की सीमाएं और अनियोजित बसावट, ये सभी मिलकर हर वर्ष बाढ़ को त्रासदी में बदल देते हैं।

बाढ़ केवल मकानों को नहीं डुबोती, वह बच्चों की पढ़ाई, किसानों की आजीविका, लोगों के स्वास्थ्य और पीने के पानी की उपलब्धता को भी प्रभावित करती है। सामाजिक न्याय का अर्थ केवल पुनर्वास नहीं, बल्कि सम्मानजनक पुनर्स्थापन भी है।

मध्य प्रदेश में चुनौती कुछ अलग है। नर्मदा, चंबल, बेतवा, केन और ताप्ती जैसी नदियों से समृद्ध यह राज्य जल संपन्न दिखाई देता है, मगर अनेक जिलों में भूजल का स्तर लगातार नीचे जा रहा है। शहरों का विस्तार, उद्योगों की बढ़ती मांग और पारंपरिक जल स्रोतों की उपेक्षा ने संकट को गहरा किया है। मालवा और बुंदेलखंड क्षेत्र में गर्मियों के दौरान जल संकट लगातार गंभीर होता जा रहा है। यह वही प्रदेश है, जहां कभी तालाबों और बावड़ियों की समृद्ध परंपरा थी।

राजस्थान का अनुभव देश के लिए एक महत्त्वपूर्ण सीख है। कम वर्षा वाले इस राज्य ने सदियों पहले ही समझ लिया था कि पानी की एक-एक बूंद भविष्य की पूंजी है। जोहड़, बावड़ी, कुंड, टांका और अन्य पारंपरिक जल संरचनाएं केवल स्थापत्य कला का उदाहरण नहीं थीं, बल्कि जल प्रबंधन की उत्कृष्ट वैज्ञानिक प्रणालियां थीं। आधुनिक विकास ने इन्हें पिछड़ेपन का प्रतीक मान लिया, लेकिन आज वही दुनिया वर्षा जल संचयन और सामुदायिक जल प्रबंधन को टिकाऊ विकास का आधार मान रही है।

महाराष्ट्र भी विरोधाभासों का राज्य है। मराठवाड़ा और विदर्भ बार-बार सूखे की मार झेलते हैं, जबकि मुंबई और कोंकण क्षेत्र कुछ दिनों की वर्षा में ही जलमग्न हो जाते हैं। यदि एक ही राज्य में सूखा और बाढ़ दोनों लगातार बने रहें, तो यह संकेत है कि जल नीति को क्षेत्रीय भूगोल के अनुसार पुनर्गठित करने की जरूरत है।

पर्वतीय राज्यों जैसे उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम और पूर्वोत्तर के कई हिस्सों की चुनौतियां मैदानी राज्यों से भिन्न हैं। यहां बादल फटना, अचानक आने वाली बाढ़, भूस्खलन और हिमनद झीलों के फटने जैसी घटनाएं बढ़ रही हैं। इन आपदाओं का संबंध केवल प्राकृतिक परिस्थितियों से नहीं, बल्कि अनियोजित निर्माण, अंधाधुंध सड़क विस्तार, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन से भी है। पहाड़ हमें सिखाते हैं कि प्रकृति के साथ संघर्ष करके विकास नहीं किया जा सकता। वहां विकास का अर्थ प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित करना है। यदि नदियों को केवल ऊर्जा उत्पादन या पर्यटन के साधन के रूप में देखा जाएगा, तो भविष्य में आपदाओं का रूप और डरावना हो सकता है।

यदि जल संकट और बाढ़ की इन विविध चुनौतियों को एक साथ रखकर देखा जाए, तो स्पष्ट होता है कि भारत को केवल अधिक बांधों, ज्यादा पाइपलाइनों या अधिक टैंकरों की आवश्यकता नहीं है। जरूरत उस दृष्टिकोण की है, जो पानी को विकास की वस्तु नहीं, बल्कि सार्वजनिक अधिकार और साझा संसाधन के रूप में देख सके।

यही कारण है कि पिछले कुछ वर्षों में केंद्र और राज्य सरकारों ने जल संरक्षण एवं सुरक्षित पेयजल की दिशा में अनेक योजनाएं शुरू की हैं। जल जीवन मिशन के माध्यम से प्रत्येक ग्रामीण परिवार तक नल से जल पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया, अटल भूजल योजना ने भूजल संरक्षण में स्थानीय समुदायों की भागीदारी पर बल दिया, जल शक्ति अभियान और 'कैच द रेन' जैसे अभियानों ने वर्षा जल संचयन को जनआंदोलन बनाने का प्रयास किया, जबकि अमृत 2.0 ने शहरी जलापूर्ति और अपशिष्ट जल प्रबंधन को नई दिशा देने की कोशिश की। मगर स्वच्छ पानी का प्रश्न आज केवल उपलब्धता का नहीं, बल्कि गुणवत्ता का है। देश के अनेक हिस्सों में पानी में फ्लोराइड, आर्सेनिक, आयरन, नाइट्रेट तथा जीवाणुओं की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक पाई जाती है।

जल संरक्षण की चर्चा तब तक अधूरी रहेगी, जब तक उसमें नागरिक भागीदारी को केंद्र में नहीं रखा जाएगा। वहीं, जलवायु परिवर्तन ने इस पूरे विमर्श को और जटिल बना दिया है। वर्षा का स्वरूप बदल रहा है। कहीं अल्प अवधि में अत्यधिक वर्षा हो रही है, तो कहीं लंबे समय तक सूखा बना रहता है। इसका अर्थ है कि भविष्य की जल नीति अतीत के अनुभवों पर आधारित नहीं हो सकती।

बाढ़ और सूखे का सबसे अधिक प्रभाव हमेशा गरीब तथा हाशिये पर खड़े समुदायों को ही झेलना पड़े, तो यह सामाजिक असमानता का स्पष्ट संकेत है। जिस समाज में आर्थिक स्थिति के आधार पर पानी की गुणवत्ता तय होने लगे, जहां संपन्न वर्ग बोतलबंद पानी खरीद ले और गरीब दूषित जल पीने को विवश हो, वहां समानता का संवैधानिक आदर्श भी अधूरा रह जाता है।

जब जिंदगी अपनी राह चुने

मनुष्य स्वभावतः योजनाओं का निर्माता है। हम निरंतर अपने भविष्य को कल्पनाओं, अपेक्षाओं और सपनों से सजाते रहते हैं। हम सोचते हैं कि अगर हम पूरी निष्ठा से प्रयास करेंगे, तो जीवन भी उसी दिशा में आगे बढ़ेगा, जिसकी हमने कल्पना की है। मगर जीवन का स्वभाव मनुष्य से भिन्न है। वह योजनाओं से अधिक संभावनाओं में विश्वास करता है। वह कभी भी एक ऐसा मोड़ सामने रख देता है, जिसकी कल्पना तक हमने नहीं की होती। यहीं से हमारे भीतर का सबसे बड़ा संघर्ष प्रारंभ होता है।

मनीषा मंजरी

अक्सर हम परिस्थितियों से कम और उनके हमारे अनुसार न होने से अधिक व्यथित होते हैं। किसी प्रिय का साथ छूट जाना, वर्षों की मेहनत के बाद भी अपेक्षित परिणाम न मिलना, संबंधों का बदल जाना या अचानक जीवन की दिशा बदल जाना, इन घटनाओं का दर्द केवल इसलिए गहरा नहीं होता कि वे कठिन हैं, बल्कि इसलिए भी कि वे हमारी बनाई हुई तस्वीर से मेल नहीं खातीं। मन का पहला प्रश्न होता है, 'ऐसा मेरे साथ ही क्यों हुआ' या 'ऐसा नहीं होना चाहिए था।' यही प्रश्न धीरे-धीरे प्रतिरोध का रूप ले लेता है। हम वास्तविकता से संघर्ष करने लगते हैं। बीता हुआ समय बदल नहीं सकता, फिर भी मन उसे बार-बार बदलने का प्रयास करता रहता है। वह 'काश' और 'अगर' के बीच झूलता रहता है। यही वह स्थान है, जहां सबसे अधिक मानसिक थकान जन्म लेती है। स्वीकार का अर्थ इस थकान को समझना है। दुर्भाग्य से, समाज ने स्वीकार को कई बार हार मान लेने का पर्याय बना दिया है। जबकि दोनों के बीच गहरा अंतर है।

हार मान लेना प्रयास छोड़ देना है, जबकि स्वीकार करना वास्तविकता को पहचानकर उसके साथ आगे बढ़ने का साहस जुटाना है। यह कहना कि 'यह मेरी इच्छा नहीं थी, लेकिन यही इस समय का सत्य है। अब मैं इसी सत्य के साथ अपने अगले कदम चुनूंगा।' यही स्वीकार है। वास्तव में स्वीकार कोई एक क्षण का निर्णय नहीं, बल्कि एक लंबी आंतरिक यात्रा है। मन तुरंत शांत नहीं होता। उसे समय चाहिए। वह पहले विरोध करता है, फिर प्रश्न पूछता है, फिर धीरे-धीरे समझने लगता है और आखिर एक दिन उसी सत्य के साथ जीना सीख लेता है, जिसे कभी अस्वीकार्य मानता था।

स्वीकार की इस यात्रा को तीन चरणों में समझा जा सकता है। पहला चरण है प्रतिरोध का, जब हम बार-बार कहते हैं, 'ऐसा नहीं होना चाहिए था।' इस अवस्था में मन वास्तविकता से लड़ता रहता है। दूसरा चरण है समझ का, जब भीतर यह स्वीकारोक्ति जन्म लेती है कि 'यह मेरी पसंद नहीं थी, लेकिन यही सच है।' यहां संघर्ष पूरी तरह समाप्त नहीं होता, पर उसकी तीव्रता कम होने लगती है। और तीसरा चरण है स्वीकार का, जब हम निर्णय लेते हैं कि अतीत हमारे वर्तमान का शासक नहीं बनेगा। हम अपने घावों को मिटाते नहीं, बल्कि उनके साथ संतुलित होकर जीना सीखते हैं।

जीवन में अधिकांश पीड़ा घटनाओं से नहीं, बल्कि टूटी हुई अपेक्षाओं से जन्म लेती है। घटना एक बार घटती है, पर मन उसे अनगिनत बार जीता है। हर बार वह कोई नया 'अगर' खोज लेता है। अगर हम ध्यान से देखें, तो पाएंगे कि हमारा दुख कई बार वास्तविक घटना से अधिक उस कल्पना के टूटने का होता है, जिसे हमने अपने भविष्य के लिए गढ़ा था। प्रकृति इस सत्य को सहजता से जीती है। नदी चट्टानों से युद्ध नहीं करती। वह उन्हें हटाने में अपनी पूरी ऊर्जा नष्ट नहीं करती। वह उनके बीच अपना मार्ग खोज लेती है। उसकी गति कभी धीमी होती है, कभी तीव्र, पर वह बहना नहीं छोड़ती। शायद इसी कारण वह आखिर अपने गंतव्य तक पहुंच जाती है।

हम भी अगर जीवन को इसी दृष्टि से देखना सीख जाएं, तो हमारे भीतर भी बहुत कुछ बदल सकता है। योजनाएं बनाना आवश्यक है, क्योंकि वे जीवन को दिशा देती हैं। मगर उनसे इस प्रकार चिपक जाना कि उनके टूटते ही हमारा अस्तित्व भी टूट जाए, यह बुद्धिमानी नहीं। परिपक्वता तब आती है जब हम पूरे मन से प्रयास करते हैं, पर परिणाम को अपने अहंकार का विषय नहीं बनने देते। स्वीकार का अर्थ यह नहीं कि दुख समाप्त हो जाएगा। किसी प्रिय की अनुपस्थिति, किसी असफलता का दर्द या किसी अधूरे सपने की टीस जीवन का हिस्सा बनी रह सकती है। पर स्वीकार उस दर्द का भार हल्का कर देता है, क्योंकि तब हम दर्द से नहीं लड़ते, बल्कि उसके साथ जीने की कला सीखते हैं। जहां संघर्ष समाप्त होता है, वहीं उपचार आरंभ होता है। शायद जीवन का सबसे बड़ा पाठ भी यही है कि हम सब कुछ नियंत्रित नहीं कर सकते। हम मौसम नहीं बदल सकते, समय को रोक नहीं सकते, लोगों के निर्णय तय नहीं कर सकते, और न ही हर परिणाम अपने अनुसार बना सकते हैं। पर हम यह अवश्य तय कर सकते हैं कि इन सबके बीच हमारा दृष्टिकोण कैसा होगा। जीवन योजनाओं से नहीं, परिवर्तन से चलता है।

अगर हम परिवर्तन को स्वीकार करना सीख लेते हैं, तो परिस्थितियों के दास नहीं रहते। हमारे भीतर एक ऐसी शांति जन्म लेती है, जो बाहरी सफलता या असफलता पर निर्भर नहीं करती। वास्तव में स्वीकार पराजय नहीं, बल्कि आत्मबोध की शुरुआत है। यह वह क्षण है जब हम जीवन से यह अपेक्षा करना छोड़ देते हैं कि वह हमारे अनुसार चले, और स्वयं को इतना विकसित कर लेते हैं कि जीवन जिस दिशा में ले जाए, वहां भी अर्थ, साहस और आशा खोज सकें, क्योंकि अंत में जीवन हमें यह नहीं सिखाता कि हमारी हर योजना पूरी होगी। वह यह सिखाता है कि हर बदली हुई योजना के बाद भी जीना, सीखना और मुस्कुराना संभव है। यही स्वीकार का वास्तविक साहस है।

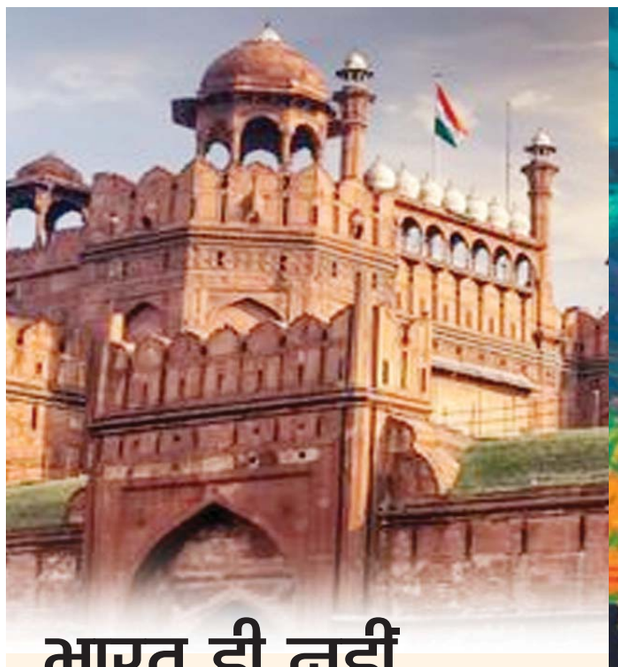

भारत ही नहीं, पूरी दुनिया के लिए बेहद खास है 15 अगस्त की तारीख

आज 15 अगस्त है। भारत में आज स्वतंत्रता दिवस है। आज ही के दिन 15 अगस्त 1947 को भारत को अंग्रेजों से आजादी मिली थी। तब से हर साल 15 अगस्त को भारत में इंडिपेंडेंस डे मनाते आ रहे हैं। आज 15 अगस्त को भारत अपना स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। लेकिन 15 अगस्त का महत्व सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है। ये तारीख पूरी दुनिया के लिए बड़ा महत्वपूर्ण है।

बांग्लादेश में राष्ट्रीय शोक दिवस

बांग्लादेश के संस्थापक नेता कहे जाने वाले और बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के पिता शेख मुजीब-उर-रहमान की हत्या 15 अगस्त को ही की गई थी। 1971 में पाकिस्तान से अलग होकर बांग्लादेश अलग राष्ट्र बना था। उसके करीब 4 साल बाद, 15 अगस्त 1975 को मुजीब-उर-रहमान को उनके परिवार के 8 सदस्यों के साथ बांग्लादेशी सेना की एक बागी टुकड़ी ने मार डाला था। इसलिए 15 अगस्त को बांग्लादेश में राष्ट्रीय शोक दिवस होता है।

एप्पल के लिए क्यों खास है 15 अगस्त

स्टीव जॉब्स के एप्पल में वापस जाने के बाद पहला सबसे महत्वपूर्ण एप्पल प्रॉडक्ट लॉन्च किया गया था। इसकी शिपिंग 15 अगस्त 1998 को शुरू हुई थी। इसे इसके यूनीक डिजाइन के लिए काफी तारीफ मिली थी। ये एक ऐसा एप्पल प्रॉडक्ट था जिसने फ्लॉपी डिस्क को यूएसबी पोर्ट से रिप्लेस कर दिया था।

कोरिया स्वतंत्रता दिवस 1948 में

वैसे तो कोरिया 1945 में जापान के 35 साल के शासन से आजाद हुआ था। लेकिन देश का उत्तरी हिस्सा सोवियत के कंट्रोल में था और दक्षिणी हिस्सा अमेरिका के कंट्रोल में था। 15 अगस्त 1948 को कोरिया रिपब्लिक (साउथ कोरिया) बना था। उसके एक महीने बाद डेमोक्रेटिक पीपल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया अस्तित्व में आया था।

वर्ल्ड वॉर 2 में जापान का सरेंडर

जापान और दुनिया के इतिहास में 15 अगस्त बेहद महत्वपूर्ण है। 15 अगस्त 1945 को दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जापान के शासक हिरोहितो ने आत्मसमर्पण की घोषणा की थी। इसके बाद विश्व युद्ध 2 खत्म होने की ओर बढ़ा था।

कॉन्गो की आजादी का दिन

15 अगस्त 1960 को कॉन्गो फ्रांस से 80 साल के शासन से आजाद हुआ था।

बहरीन का इंडिपेंडेंस डे

बहरीन 15 अगस्त 1971 को यूनाइटेड किंगडम की गुलामी से आजाद हुआ था। बहरीन उन पहले खाड़ी देशों में है जिसने अपने यहां तेल की खोज की और 1931 में रिफाइनरी स्थापित की। हालांकि उसी साल ब्रिटेन और ऑटोमन साम्राज्य के बीच आजादी के समझौते पर हस्ताक्षर हुए थे। लेकिन उसके बाद भी ये ब्रिटिश शासन के अधीन रहा था। अक्सर 14 अगस्त 1971 को इस देश के लिए आजादी का दिन कह दिया जाता है। लेकिन बहरीन आधिकारिक तौर पर 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाता है।

लिंक्टेंस्टीन स्वतंत्र हुआ

लिंक्टेंस्टीन 15 अगस्त को नेशनल डे मनाता है। इस दिन ये देश संप्रभुता और अपनी पहचान का जश्न मनाता है।

200 साल की गुलामी के बाद 15 अगस्त 1947 को हमें आजादी मिली तभी से दुनिया भर के सभी भारतीय इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाते हैं. लेकिन हम यह कभी नहीं भूल सकते कि हमें यह आजादी आसानी से नहीं मिली. हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति दी तब कहीं जाकर हमें आजादी मिली

15 अगस्त को ही आजादी क्यों मिली, क्या कोई और तारीख भी तय हुई थी?

15 अगस्त 1947 की तारीख सिर्फ किसी कैलेंडर का पन्ना भर नहीं है, बल्कि यह उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और लहू की कहानी है, जिन्होंने अपनी जवानी देश के नाम न्योछावर कर दी. जब भारत गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, तब हर भारतीय की आंखों में आजादी का एक खूबसूरत सपना पलता था. लंबी पीड़ा और संघर्ष के बाद आखिरकार वह सुबह आई जिसने एक पूरे राष्ट्र को नई जिंदगी दी. लेकिन इतिहास के पन्नों में यह सवाल हमेशा आता है कि आखिर आजादी के लिए 15 अगस्त का ही दिन क्यों तय किया गया, जबकि पहले इसकी योजना कुछ और ही बनाई गई थी क्या?

पहले कौन सी तारीख हुई थी तय?

ब्रिटिश हुकूमत ने भारत छोड़ने का मन बना लिया था. 20 फरवरी 1947 को ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री क्लेमेंट एटली ने हाउस ऑफ कॉमन्स में एक ऐतिहासिक ऐलान किया. उन्होंने आधिकारिक तौर पर कहा कि ब्रिटिश सरकार 30 जून 1948 तक सत्ता भारतीय हाथों में सौंपकर भारत से वापस लौट जाएगी. यानी मूल योजना के मुताबिक भारत को 1948 के मध्य में आजादी मिलनी थी. लेकिन देश के भीतर बनते-बिगड़ते हालातों ने अंग्रेजों को अपनी योजना समय से लगभग 10 महीने पहले बदलने पर मजबूर कर दिया.

जन-आंदोलन जिसने ब्रिटिश हुकूमत की नींव हिला दी

भारत में आजादी की लौ तेजी से धधक रही थी. महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना आजाद और सुभाष चंद्र बोस जैसे नायकों के नेतृत्व ने पूरे देश को एक सूत्र में पिरो दिया था. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन ने अंग्रेजी प्रशासन की कमर तोड़ दी थी. इसके बाद द्वितीय विश्वयुद्ध के खत्म होते ही नौसेना विद्रोह, श्रमिक आंदोलनों और भारतीय सैनिकों के भीतर बढ़ते असंतोष ने ब्रिटिश सरकार को यह अच्छी तरह समझा दिया कि अब भारत पर ज्यादा दिन तक हुकूमत चलाना पूरी तरह असंभव है.

लॉर्ड माउंटबेटन का आगमन और बिगड़ते हालात

मार्च 1947 में लॉर्ड लुई माउंटबेटन भारत के आखिरी वायसराय बनकर दिल्ली पहुंचे. उनका मुख्य काम सत्ता का हस्तांतरण सही तरीके से पूरा कराना था. उस समय उनके पास करीब डेढ़ साल का वक्त था, लेकिन देश के हालात बहुत तेजी से बिगड़ रहे थे. जगह-जगह हिंदू-मुस्लिम तनाव और सांप्रदायिक हिंसा भड़क रही थी. कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच सत्ता के बंटवारे को लेकर कोई सहमति नहीं बन पा रही थी. माउंटबेटन को लगा कि अगर जून 1948 तक इंतजार किया गया तो देश में हालात बेकाबू हो सकते हैं.

3 जून की प्लानिंग और भारत का बंटवारा

हालात को संभालते हुए 3 जून 1947 को एक बड़ी योजना सामने रखी गई, जिसे 3 जून योजना या माउंटबेटन प्लान कहा जाता है. इसके तहत ब्रिटिश भारत को दो हिस्सों-भारत और पाकिस्तान में बांटने का फैसला हुआ. भारी मन से कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने इसे स्वीकार किया. इसके तुरंत बाद जुलाई 1947 में ब्रिटिश संसद ने भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पास किया, जिसमें कानूनन तय हुआ कि 15 अगस्त 1947 को भारत और पाकिस्तान दो अलग स्वतंत्र देश बन जाएंगे.

15 अगस्त की तारीख क्यों चुनी गई?

15 अगस्त का दिन चुनने का पूरा फैसला लॉर्ड माउंटबेटन का था. इस तारीख के पीछे द्वितीय विश्वयुद्ध से जुड़ी एक बड़ी घटना शामिल थी. दरअसल, 15 अगस्त 1945 को ही जापान की सेना ने मित्र राष्ट्रों के सामने सरेंडर किया था. जापानी सम्राट हिरोहितो ने रेडियो संदेश के जरिए पॉट्सडैम घोषणा को स्वीकारते हुए युद्ध रोकने का ऐलान किया था. इस जीत को दुनिया भर में विक्ट्री ओवर जापान डे के रूप में मनाया गया था, जो माउंटबेटन की सैन्य जिंदगी की सबसे बड़ी कामयाबी थी.

माउंटबेटन के लिए 15 अगस्त क्यों था लकी?

माउंटबेटन द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान दक्षिण-पूर्व एशिया में मित्र राष्ट्रों के सुप्रीम कमांडर रहे थे. जापान का आत्मसमर्पण उनके करियर का सबसे यादगार और गौरवशाली पल था. माउंटबेटन ने बाद में खुद माना था कि उन्होंने 15 अगस्त की तारीख इसलिए चुनी, क्योंकि यह उनके लिए बेहद भाग्यशाली दिन था. वे जापान के सरेंडर की दूसरी वर्षगांठ के मौके पर सत्ता सौंपना चाहते थे. हालांकि, इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि जापान के कारण भारत आजाद हुआ.

जल्दबाजी के फैसले का दर्दनाक अंजाम

माउंटबेटन ने गृह-युद्ध के खतरे और प्रशासन के ठप होने के डर से जून 1948 का इंतजार नहीं किया और 10 महीने पहले ही आजादी दे दी. उस समय ब्रिटिश अफसर भारत छोड़ने की तैयारी में थे और शासन व्यवस्था कमजोर पड़ रही थी. कांग्रेस जल्द सत्ता चाहती थी और मुस्लिम लीग अलग देश पर अड़ी थी. लेकिन इस जल्दबाजी का एक भयानक नुकसान हुआ. सीमा रेखा का एलान बहुत देर से हुआ, जिसके चलते लाखों लोग रातों-रात बेघर हो गए और बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक हिंसा में निर्दोष लोगों की जान चली गई.

आधी रात को मिली आजादी

भारत की आजादी का मुख्य समारोह 14 और 15 अगस्त 1947 की आधी रात को संविधान सभा में आयोजित हुआ. ठीक रात 12 बजे जब दुनिया सो रही थी, भारत ने अपनी नई सुबह की शुरुआत की. इसी ऐतिहासिक पल पर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपना मशहूर भाषण नियति से साक्षात्कार दिया. 14 अगस्त का अंत और 15 अगस्त की शुरुआत का वह आधी रात का पल ब्रिटिश हुकूमत के खात्मे और एक महान राष्ट्र के पुनर्जन्म का प्रतीक बन गया.

15 अगस्त पर वंदे मातरम क्यों नहीं गाया जाता था? अब किस कानून से होगी शुरुआत

इस स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान पहली बार 'वंदे मातरम' को गाया जाएगा. जी हां, अभी तक राष्ट्रीय गीत को कभी भी इस समारोह में नहीं गाया गया है. आखिर अभी तक ऐसा क्यों था? आजादी से पहले ऐसा क्या हुआ था कि वंदेमातरम को लेकर विवाद था? इसके साथ ही अब किस नियम में बदलाव के तहत शामिल क्या गया है? भारत देश के 80वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर इस बार कुछ खास होने जा रहा है. 15 अगस्त के दिन देश की राजधानी दिल्ली के लालकिले की प्राचीर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार 13वें साल तिरंगा झंडा फहराएंगे. फिर वह देश के नाम अपना संबोधन देंगे. इस दौरान तमाम सांस्कृतिक उत्सव भी होंगे. अभी तक आपने जो भी पढ़ा उसमें कुछ अलग नहीं है, बल्कि खास तो यह है कि इस स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान पहली बार 'वंदे मातरम' को गाया जाएगा. जी हां, अभी तक राष्ट्रीय गीत को कभी भी इस समारोह में नहीं गाया गया है. आखिर अभी तक ऐसा क्यों था? आजादी से पहले ऐसा क्या हुआ था कि वंदेमातरम को लेकर विवाद था? इसके साथ ही अब किस नियम में बदलाव के तहत शामिल क्या गया है?

स्वतंत्रता दिवस पर वंदे मातरम

लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस के आयोजन को लेकर रक्षा मंत्रालय की तरफ से प्राप्त जानकारी के मुताबिक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण से पहले लाल किले की प्राचीर से देश का राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' गाया जाएगा. आजादी के जश्न के इतिहास में यह पहली बार होगा जब लाल किले पर मुख्य समारोह के दौरान 'वंदे मातरम' गूंजेगा. लेकिन बड़ा सवाल यही है कि अब तक इसे स्वतंत्रता दिवस के मुख्य कार्यक्रम में शामिल क्यों नहीं किया जाता था और इसके पीछे क्या वजह रही है?

अब तक क्यों नहीं गाया जाता था?

राष्ट्रीय प्रोटोकॉल और नियम के मुताबिक अब तक लाल किले पर होने वाले आधिकारिक ध्वजारोहण समारोह में सिर्फ राष्ट्रगान यानी 'जन गण मन' को ही प्राथमिकता दी जाती थी. राजनीतिक जानकारों का मानना है कि साल 1937 में 'वंदे मातरम' के शुरुआती दो छंदों को ही रखने का फैसला इसलिए लिया गया था ताकि देश की विविधता को ध्यान में रखते हुए किसी भी तरह के धार्मिक विवाद से बचा जा सके.

स्वतंत्रता दिवस इतिहास-महत्व

स्वतंत्रता दिवस हर साल 15 अगस्त को मनाया जाता है। इसी दिन 1947 को भारत से ब्रिटिश शासन का अंत और स्वतंत्र भारत की स्थापना हुई थी। 100 वर्ष ईस्ट इंडिया कंपनी और 100 वर्ष ब्रिटिश क्राउन का मिलाकर 200 वर्ष अंग्रेजों ने हम भारतीयों पर राज किया लेकिन ये ही वो दिन था जब हमारे पूर्वजों ने आजादी की खुली हवा में सांस ली। 15 अगस्त 2025 को भारत अपना 79 वा स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है। 17वीं शताब्दी की शुरुआत में अंग्रेज भारत आए और उन्होंने धीरे-धीरे संपूर्ण भारत पर अपना अधिकार जमा लिया और जब 1857 की क्रांति में भारतीय समाज ने उन्हें उखाड़ फेंकने की सोची तो उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को हटाकर ब्रिटिश क्राउन का शासन लागू कर दिया। लेकिन भारतीयों को और विदेशी शासन बिल्कुल भी नहीं आ रहा था और उन्होंने इसे जड़ से उखाड़ने की सूची और 15 अगस्त 1947 को लगभग 200 वर्ष की गुलामी के बाद भारत आजाद हुआ।

याद करो अपने आदर्शों को

आजादी के लिए जिन भी वीर जवानों ने हमारे लिए अपने प्राणों का त्याग किया है हमें उन आदर्शों को याद करना चाहिए और उनके बलिदान को कभी नहीं भूलना चाहिए।

संपूर्ण भारत में स्वतंत्रता दिवस मिठाईयां बांटकर स्कूलों और कॉलेजों में गोंदण बांटकर बनाया जाता है सभी सार्वजनिक व प्राइवेट जगह पर तिरंगा झंडा फहराया जाता है और लाल किले की प्राचीर पर झंडा फहराने के बाद भारतीय प्रधानमंत्री भाषण देता है और उसके बाद राष्ट्रपति का संबोधन होता है।

खुशाल दास यूनिवर्सिटी में हर्षोल्लास से मनाया 80वां स्वतंत्रता दिवस

हनुमानगढ़। खुशाल दास यूनिवर्सिटी में देश का 80वां स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास एवं देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के डायरेक्टर जनरल एवं सेवानिवृत्त आईजी गिरीश चावला तथा विश्वविद्यालय के प्रो वाइस चांसलर प्रोफेसर डॉ. अमरजीत सिंह उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए गुरु गोबिंद सिंह चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष बाबू लाल जुनेजा ने स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों को नमन करते हुए कहा कि देश की आजादी असंख्य वीरों के त्याग, तपस्या और बलिदान का परिणाम है। उन्होंने विद्यार्थियों से राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाने और देश के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने का आह्वान किया।

मुख्य अतिथि एवं विश्वविद्यालय के डायरेक्टर जनरल गिरीश चावला ने कहा कि आज का दिन हमें अपने बलिदानी पूर्वजों के त्याग और संघर्ष की बदौलत मिला है। हमारा देश सौभाग्यशाली है कि यहां वीरों और योद्धाओं की कभी कमी नहीं रही। भारत विविधता और समृद्धि से परिपूर्ण देश है। उन्होंने कहा कि समाज को नशे जैसी बुराइयों को पनपने से रोकने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे।

एमडी दिनेश कुमार जुनेजा ने स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि देश की प्रगति में युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने विद्यार्थियों से शिक्षा के साथ-साथ अनुशासन, संस्कार और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना विकसित करने का आह्वान किया।

चेयरपर्सन वरुण यादव ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस हमें अपने देश के प्रति कर्तव्यों का स्मरण कराता है। उन्होंने विद्यार्थियों को देश की एकता, अखंडता और विकास में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

प्रो वाइस चांसलर प्रोफेसर डॉ. अमरजीत सिंह ने कहा कि आज का दिन हमारे लिए सबसे बड़ा और गौरवपूर्ण दिन है। लाखों लोगों के बलिदान के बाद हमें यह आजादी मिली है, जिसे हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। देश से बड़ा कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि हम सच्चे मन से समाज और देश के लिए समर्पित होकर कार्य करेंगे तो हमारा जीवन भी राष्ट्रसेवा और क्रांतिकारी विचारों का प्रतीक बन सकता है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के वीरों की गौरवगाथा पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने का संदेश दिया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. विक्रम सिंह ओळख ने विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों एवं उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का मंच संचालन मदन लाल शर्मा ने किया।

विभाजन विभीषिका प्रदर्शनी का स्कूली विद्यार्थियों ने किया अवलोकन

हनुमानगढ़। विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के अवसर पर जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय परिसर में आयोजित विभाजन विभीषिका प्रदर्शनी का शुक्रवार को विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अवलोकन किया। प्रदर्शनी देखने पहुंचे नॉर्थ पॉइंट स्कूल, सेक्टर-12 स्थित पीएम विद्यालय तथा आदर्श पब्लिक स्कूल, 1 केएनजे के विद्यार्थियों ने भारत विभाजन से जुड़े ऐतिहासिक दस्तावेजों, दुर्लभ छायाचित्रों एवं प्रदर्शित सामग्री के माध्यम से विभाजन की पीड़ा और उससे जुड़े मानवीय पक्ष को समझा।

प्रदर्शनी के दौरान विद्यार्थियों को वर्ष 1947 के भारत विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, लाखों लोगों के विस्थापन, संघर्ष और बलिदान से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई। प्रदर्शित चित्रों एवं सामग्री के माध्यम से उन्हें देश की एकता, अखंडता और सामाजिक सद्भाव बनाए रखने का संदेश भी दिया गया।

विद्यार्थियों को बताया गया कि विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस का उद्देश्य इतिहास के उस कठिन दौर को स्मरण करते हुए नई पीढ़ी को राष्ट्रीय एकता, भाईचारे और मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूक करना है। विद्यार्थियों ने प्रदर्शनी में प्रदर्शित तथ्यों को गंभीरता से देखा और इतिहास से सीख लेकर राष्ट्रहित में कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया।

जिला प्रशासन द्वारा आयोजित यह प्रदर्शनी 13 एवं 14 अगस्त को आमजन एवं विद्यार्थियों के अवलोकन के लिए लगाई गई है, ताकि युवा पीढ़ी देश के इतिहास के इस महत्वपूर्ण अध्याय से परिचित हो सके और राष्ट्रीय एकता एवं सद्भाव की भावना को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके। ध्यान रहे कि पाकिस्तान 14 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाता है और भारत इसी कारण से विभाजन विभिषका का आयोजन करता है।

रोटरी क्लब 'सिटी' ने राजकीय विद्यालय में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया 80वां स्वतंत्रता दिवस

श्रीगंगानगर। रोटरी क्लब श्रीगंगानगर 'सिटी' द्वारा चक 17 एमएल, पठानवाला स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 80वां स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लासपूर्वक गरिमामय वातावरण में मनाया गया। सर्वप्रथम अध्यक्ष रोटे. राकेश गोयल, विद्यालय प्रधानाध्यापक एवं ग्राम के सरपंच द्वारा ध्वजारोहण किया गया तथा पदाधिकारियों, सदस्यों, विद्यालय स्टाफ व विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रगान का गायन किया गया।

इस मौके पर रोटरी क्लब श्रीगंगानगर 'सिटी' द्वारा विद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन स्वरूप स्टेशनरी किट प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों को स्वच्छ एवं शीतल पेयजल उपलब्ध कराने हेतु 4 वाटर कैंपर तथा सूचना प्रसार हेतु 2 डिस्प्ले बोर्ड विद्यालय प्रशासन को सौंपे गए। क्लब ने परिसर की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए विद्युत अर्थिंग का कार्य संपन्न कराया तथा वाटर कूलर को दुरुस्त करवाने का उत्तरदायित्व लिया। समारोह में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति से ओत-प्रोत गीतों एवं नृत्यों की मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों द्वारा अदभुत समां बांधा।

वक्ताओं ने राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला तथा विद्यार्थियों को पढ़-लिखकर अच्छे नागरिक बनकर समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगीण उत्थान में बढ़-चढक़र योगदान देने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात् हरियाली तीज पर विद्यालय परिसर में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया।

इस अवसर पर अमेरिका से पधारे सारस्वत अतिथि विजय अग्रवाल, क्लब अध्यक्ष राकेश गोयल, सचिव इंजी. अमित गोयल, कोषाध्यक्ष इंजी. विकास अग्रवाल, उपाध्यक्ष सुनील सिंघल, निवर्तमान अध्यक्ष संजय अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष नागर मित्तल, प्रोजेक्ट चेयरमैन अंकुर गर्ग व साहिल गोयल, सदस्य नेकीराम स्वामी, अनिल पलोर, मोनित गुप्ता, ज्ञान साहू, अरविंद सचदेवा, शुभम अग्रवाल, दीपक अग्रवाल, अतुल अग्रवाल, दीपक गोयल सहित रोटरी क्लब श्रीगंगानगर 'सिटी' पदाधिकारी व सदस्य, विद्यालय स्टाफ, विद्यार्थी तथा गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर सांस्कृतिक कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने दी शानदार प्रस्तुतियां

श्रीगंगानगर। स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त 2026) की पूर्व संध्या पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन शुक्रवार शाम को एसडी बिहाणी कॉलेज ऑडिटोरियम में किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने एक से बढ़कर एक देशभक्ति से ओतप्रोत विभिन्न कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दीं।

इससे पहले मधुसुदन बिहाणी ने दीप प्रज्ज्वलित किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत, समूहगान, कथक एवं अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से राष्ट्रप्रेम का संदेश दिया।

कार्यक्रम में हॉप्स एंड ड्रिम्स द्वारा तेरा हिमालय आकाश छू ले, एसजीएन खालसा गर्ल्स पब्लिक स्कूल द्वारा ये जो देश है तेरा एवं वंदे मातरम्, तथा जुबिन स्पास्टिक होम एंड चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा यहाँ हर कदम कदम पे धरती बदले रंग (देश रंगीला) प्रस्तुत किया गया।

इसी क्रम में नॉलेज हाइट पब्लिक स्कूल ने आजा आजा जिंद शामियाने के तले, एमजीपीएस नं. 5 पुलिस लाइन ने सरहद पर चले आवाज लगानी है, जबकि भारती कॉन्वेंट स्कूल ने कांच की नींद आई, पत्थर की ख्वाब लाई की प्रस्तुति दी।

मदर्स प्राइड स्कूल ने अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों, किड्स कैंप कॉन्वेंट स्कूल ने कांधे पे सूरज टिका के चलाब दो तथा राजेंद्र चिल्ड्रन एकेडमी ने वेदों से निकला ज्ञान अपार, संख्याओं में खोला विज्ञान का संसार प्रस्तुत कर दर्शकों को प्रभावित किया।

स्पेंगल पब्लिक स्कूल ने सवेरे सवेरे यारों से मिलने बन-ठन के निकले हम, बाल निकेतन सैकेंडरी स्कूल ने पगड़ी संभाल जट्टा और आत्मवल्लभ जैन पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने अहसास थोड़ा तो जगाए अपने दिलों में हम (वंदे मातरम्) प्रस्तुत किया।

वहीं नोजगे पब्लिक स्कूल द्वारा मोहे पनघट पर नंद लाल छेड़ गयो रे पर कथक प्रस्तुति, गुरुनानक गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल द्वारा सोनी धरती पंजाब दी विच तरंजना नचदियां तथा बिहाणी चिल्ड्रन एकेडमी (बीसीए) द्वारा खुद जिए सबको जीना सिखाए, अपनी खुशियां चलो बांट आए की प्रस्तुति दी गई। उपस्थितजनों ने तालियां बजाकर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर एसडीएम गंगानगर नयन गौतम, एसीएम श्रीमती स्वाति गुप्ता, महिला अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक विजय कुमार, अरविंदर सिंह, नगर परिषद आयुक्त मिलखराज चुघ, विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थी, उनके अभिभावक और स्टाफ सहित अन्य मौजूद रहे। प्रतिभागियों को अतिथियों द्वारा सम्मानित भी किया गया।

जिला कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग ने निकाली 'लोकतंत्र बचाओ तिरंगा यात्रा'

श्रीगंगानगर। जिला कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग द्वारा शुक्रवार सांय लोकतंत्र बचाओ तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। जिलाध्यक्ष राजेश नागर ने नेतृत्व में एसएसबी रोड से प्रारम्भ तिरंगा यात्रा मुख्य मार्गों व बीएसएफ के समीप गली नं. 10 होते हुए जिला कार्यालय पहुंचकर सम्पन्न हुई। इस मौके पर जिलाध्यक्ष राजेश नागर ने कहा कि यह तिरंगा यात्रा देश की एकता तथा अखंडता का जीवंत संदेश है। तिरंगा हमारी आन-बान-शान तथा संविधान के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

उन्होंने कांग्रेस पार्टी के ऐतिहासिक योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कांग्रेस ने स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया तथा आजादी के बाद भारत को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में अमूल्य योगदान दिया। पार्टी ने सदैव संवैधानिक व लोकतांत्रिक व्यवस्था के जरिए प्रत्येक जाति, धर्म तथा संप्रदाय के अमीर-गरीब, महिला-पुरुष सभी नागरिकों को समता, समानता, सम्मान व न्याय का अधिकार दिया है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार आजादी की लड़ाई में कांग्रेस अग्रिम पंक्ति में खड़ी थी, उसी प्रकार आज भी देश के संविधान, लोकतंत्र तथा राष्ट्रध्वज की गरिमा की रक्षा के लिए पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता सर्वस्व अर्पण करने के लिए तत्पर है। कार्यक्रम के अंत में पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं द्वारा मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले अमर शहीदों के अदम्य साहस तथा बलिदान का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' पर विचार गोष्ठी आयोजित

श्रीगंगानगर। अखिल भारतीय साहित्य परिषद, इकाई श्रीगंगानगर के 'युवा आयाम प्रकोष्ठ' तथा राजकीय सार्वजनिक जिला पुस्तकालय, श्रीगंगानगर के संयुक्त तत्वावधान में 14 अगस्त, शुक्रवार सांय 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' पर पीड़ितों को याद करने तथा देश में सामाजिक समरसता रखते हुए आत्मबोध से विश्व बोध के भाव निर्माण के उद्देश्य से विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण व पुष्पांजलि अर्पित की गई।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता जिला पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. रामनारायण शर्मा ने भारत विभाजन 1947 की त्रासदी में प्राण गंवाने वाले सभी लोगों को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए कहा कि यह 14 अगस्त का दिन भारतीय इतिहास के उस दर्दनाक दौर की स्मृति को जीवन्त करता है, जब देश के विभाजन ने करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित किया। इस पीड़ादायक समय में लोगों ने जिस साहस, धैर्य और दृढ़ता का परिचय दिया, वह सदैव स्मरणीय रहेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्कार भारती की नगर साहित्य विधा प्रमुख राधा शर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि इतिहास की सीख हमारे विवेक में रहे। उन्होंने सामाजिक सद्भाव रखते हुए भारत की एकता व अखंडता का संकल्प लेने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि युवा आयाम प्रकोष्ठ के जिला मंत्री व नवोदित लेखक पवन सैन ने कहा कि अखंड भारत के निर्माण के संकल्प में साहित्य और साहित्यकारों की विशेष भूमिका है, क्योंकि साहित्य ही समाज की संवेदनाओं को शब्द देता है।

कार्यक्रम की सारस्वत अतिथि युवा आयाम प्रकोष्ठ की उपाध्यक्ष चित्रलेखा शर्मा ने कहा कि विभाजन की विभीषिका को याद करने का सबसे सार्थक तरीका यही है कि हम लाखों पीड़ितों की स्मृतियों का सम्मान करें तथा ऐसा भारत बनाने का संकल्प लें, जो कि सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता व अखंडता के सूत्र में आबद्ध करे। इस मौके पर सभी ने भारत माता के जय के नारों से सारा वातावरण गुंजायमान कर दिया। कार्यक्रम के अंत में दो मिनट का मौन रखकर विभाजन विभीषिका के पीड़ितों को नमन किया गया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय साहित्य परिषद, इकाई श्रीगंगानगर के 'युवा आयाम प्रकोष्ठ' पदाधिकारी व सदस्य, राजकीय सार्वजनिक जिला पुस्तकालय स्टाफ, प्रबुद्ध पाठक, विद्यार्थी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

हिन्दी प्रचार समिति की बैठक में ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिताओं के आयोजन का निर्णय

श्रीगंगानगर। हिंदी प्रचार समिति, श्रीगंगानगर की कार्यकारिणी बैठक शुक्रवार को अध्यक्ष जगीर फरमा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। समिति महासचिव मनीराम सेतिया के एल ब्लॉक स्थित आवास पर आयोजित इस बैठक में 14 सितम्बर को गरिमापूर्वक 'हिन्दी दिवस' मनाने तथा राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन करने, जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्टेशनरी वितरण करने आदि कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। बैठक में हिंदी भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार तथा विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि जागृत करने के उद्देश्य से श्रीगंगानगर ब्लॉक स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 14 सितंबर को आयोजित मुख्य समारोह में सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। कोषाध्यक्ष सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य हरपाल सिंह ने बताया कि श्रीगंगानगर ब्लॉक स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं को कनिष्ठ एवं वरिष्ठ दो वर्गों में विभाजित किया गया है, जिसके तहत कक्षा 9 से 12 तक के वरिष्ठ वर्ग के लिए 'हिन्दी भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ' विषय पर स्वरचित काव्य पाठ तथा 'वैश्विक मंच पर हिन्दी का बढ़ता प्रभाव एवं भावी सम्भावनाएँ' विषय पर 5 मिनट की समय सीमा वाली भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। कक्षा 5 से 8 तक के कनिष्ठ वर्ग हेतु 'मेरी भाषा, मेरी पहचान हिन्दी' विषय पर स्वरचित कविता एवं 'हिन्दी हमारी धरोहर' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता रखी गई है।

इसके अतिरिक्त 14 सितंबर को 'डिजिटल युग में हिन्दी भाषा का भविष्य और चुनौतियाँ' विषय पर 5 मिनट की समय सीमा के साथ विचार गोष्ठी का भी आयोजन होगा, जिसमें शिक्षक, साहित्यकार, विद्यार्थी एवं प्रशासनिक अधिकारी सहभागिता निभा सकेंगे। उन्होंने बताया कि सम्बन्धित विद्यालय प्रधानाध्यापक 25 अगस्त, 2026 तक अपने-अपने विद्यालयों में ये प्रतियोगिताएँ संपन्न कराकर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाएं 31 अगस्त, 2026 तक राजकीय सार्वजनिक पुस्तकालय, श्रीगंगानगर अथवा तपोवन ब्लड बैंक के हथाई केंद्र पर सुरेंद्र कुमार शर्मा के पास जमा करानी होगी। बैठक के दौरान विभाजन विभीषिका दिवस का स्मरण करते हुए महासचिव मनीराम सेतिया ने काव्य रचना 'देश विभाजन की त्रासदी' का पाठ कर विभाजन पीड़ितों के दर्द को बयां किया। अध्यक्ष जगीर फरमा ने हिन्दी दिवस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए पदाधिकारियों व सदस्यों दायित्व सौंपे। बैठक में विभिन्न राजकीय विद्यालयों के जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्टेशनरी वितरण करने पर भी सहमति बनी।

बैठक के अंत में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर 1947 के बंटवारे की वीभत्स घटनाओं को याद करते हुए विभाजन विभीषिका के पीड़ितों को नमन किया गया तथा वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. ओ.पी. गोयल के अनुज महावीर प्रसाद गोयल के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए 2 मिनट का मौन रखकर मृतात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

बच्चों को नि:शुल्क शिक्षण सामग्री, यूनिफॉर्म एवं सैनिटरी पैड वितरित

श्रीगंगानगर। सामाजिक सरोकार एवं शिक्षा के क्षेत्र में सेवा की पहल को आगे बढ़ाते हुए टेम्परेन्स वेल्फेयर फाउंडेशन एवं किरण क्रांति फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में जयपुर क्षेत्र के भासिंगपुरा स्थित राजकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय में जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए विशेष वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के करीब 200 छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क शिक्षण सामग्री, स्कूल यूनिफॉर्म एवं जूते वितरित किए गए। वहीं विद्यालय की बालिकाओं को सैनिटरी पैड उपलब्ध कराते हुए मासिक धर्म स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भी किया गया।

टेम्परेन्स वेल्फेयर फाउंडेशन की डायरेक्टर दीपाली छाबडा ने बताया कि कार्यक्रम में किरण क्रांति फाउंडेशन की अध्यक्ष डा. किरण देवल और श्रीमती अपेक्षा अग्रवाल ने विद्यालय स्टाफ एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। अतिथियों ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए शिक्षा के महत्व, नियमित विद्यालय आने तथा अपने लक्ष्य के प्रति निरंतर मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। नए जूते, यूनिफॉर्म और शिक्षण सामग्री पाकर बच्चों के चेहरे पर खुशी साफ दिखाई दी।

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय स्टाफ एवं आयोजकों ने सहयोग के लिए सभी उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त किया। दोनों संस्थाओं ने भविष्य में भी ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों एवं महिलाओं के हित में ऐसे जनकल्याणकारी कार्यक्रम निरंतर आयोजित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।